वर्ष–2

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 6

माह दिसम्बर 2005 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

''लखनऊ''

वार्षिक – 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपरइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अक़वाले इमाम मो0 बाक़िर अ0

- इल्म हासिल करो ताकि लोग तुम्हें पहचानें और उस पर अमल करो ताकि तुम्हारा शुमार उलमा में हो।
- इबादते इलाही का ख़ास ख़याल रखो, आमाले ख़ैर में जल्दी करो, बुराइयों से परहेज़ करो।
- हमेशा लोगों से सच बोलो ताकि सच सुनो (याद रखो) सच्चाई तलवार से भी ज़्यादा तेज़ है।

गदीर और मक़ामे हज़रत अली अ0

आयतुल्लाहिल उज़्मा सै0 अली ख़ामेना–ई साहब

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की जानशीनी शीओं के अक़ीदे के मुताबिक़ एक इलाही मन्सब है कि जो खुदा की तरफ से उसके हक़दार को मिलती है। रसूले ग्रामी (स0) ने इस्लाम के शुरु ही से कि जब उन्होंने इस्लाम की दावत को आम लोगों में भी शुरु किया और उन्होंने अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों को अपनी रिसालत से आगाह किया और क़यामत के अज़ाब से डराया और इन ही तबलीग़ी महफिलों में अपनी जानशीनी के मसले को भी बयान किया और बनी हाशिम में से 45 लोगों को बुलाकर हुक्मे इलाही को बयान किया। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने फ़रमाया तुम में से जो कोई भी सबसे पहले मेरी दावत क़ुबूल करेगा और मेरी मदद करेगा मेरा भाई, वसी और जानशीन होगा और तारीख़ ने भी इस बात की गवाही दी कि सिवाए हज़रत अली (अ0) के कोई अपनी जगह से खड़ा न हुआ और किसी ने रसूले अकरम (स0) की दावत को क़ुबूल और मदद करने की हिमायत नहीं की। लिहाज़ा रसूले अकरम (स0) ने इस मजमे में फ़रमाया कि यह नौजवान (हज़रत अली अ0) मेरा वसी और जानशीन है जैसा कि यह वाक़ेआ तारीख़ लिखने वालों और मुफ़स्सिरीन के दरमियान ''यौमुद्दार'' और ''बदउद्दावत'' के नाम से मशहूर है इसके अलावा भी रसूलुल्लाह (स0) ने अपनी 23 साला रिसालत में मुख़तलिफ मक़ामात और मुनासबतों पर हज़रत अली (अ0) की जानशीनी के मसले को उम्मते मुस्लिमा के सामने बयान किया और उनके मक़ाम को सबसे ज़ियादा बरतर और अहम क़रार दिया और सबसे ज़ियादा अहम और ख़ास इम्तियाज़ कि जो हज़रत अली (अ0) के मानने वालों और उनके दोस्तों के लिए ख़ुशी का बाअिस और आपसे हसद रखने वालों के लिए जलन का बाअिस बनती है, ''हदीसे मन्ज़ेलत'' है यानी रसूले ख़ुदा (स0) ने हज़रत अली (अ0) को अपने लिए ऐसा समझा कि जैसे मूसा (अ0) के लिए हारून (अ0)।

इसके अलावा एक और हदीस (हदीसे सद्दे अबवाब) है मदीने हिजरत के बाद अस्हाबे पैग़म्बर (स0) के घरों के दरवाज़े मस्जिदे नबवी में खुला करते थे कुछ ही अरसे बाद रसूले ख़ुदा (स0) को हुक्मे इलाही होता है कि ऐ मुहम्मद मस्जिदे नबवी में खुलने वाले तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये जाएँ सिवाए हज़रत अली (अ0) के घर का दरवाज़ा। इसी तरह एक और हदीस कि जिसे हम ''हदीसे उख़ुव्वत'' के नाम से पहचानते हैं हज़रत अली (अ0) के बुलन्द मक़ाम की गवाही देती है, इस हदीसे उख़ुव्वत का माजरा कुछ इस तरह से है कि जब रसले ख़ुदा (स0) ने तमाम मुहाजिरीन व अन्सार को एक दूसरे का और हज़रत अली (अ0) को अपना भाई क़रार दिया।

इसके अलावा और दूसरी अहादीस मस्लन ''हदीसे इब्लाग़'' (पयामे बराअत) कि यह भी हज़रत अली (अ0) के लिए बहुत सी फ़ख़र करने वाली बातों में से एक फ़ख़र वाली बात है और ख़ास तौर पर अबुबक्र के मुक़ाबले में एक बड़ी फ़ख़्र करने वाली बात है और सबसे बढ़कर रोज़े मुबाहला कि जिस दिन ख़ुदावन्दे आलम ने सूर–ए–आले इमरान में हज़रत अली (अ0) को

रसूले ख़ुदा का नफ्स क़रार दिया और आख़िरकार सबसे ज़्यादा वाज़ेह और मुस्तनद ''हदीसे ग़दीर'' है कि जो रसूले ख़ुदा (स0) ने अपने आख़री हज (10 हि0) से वापसी पर बयान फरमायी।

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने 10वीं हिजरी में हज़ारों लोगों के दरमियान कि जो सबके सब उम्मते मुस्लिमा में से थे हज्जे इब्राहीमी (अ0) को अदा किया और सारे ज़मान–ए–जाहिलियत के क़वानीन को एक बार फिर ग़लत साबित करके ख़त्म किया और मदीने की तरफ वापसी शुरु की अभी मक्के से कुछ ही दूर हुए थे कि यह आयत नाज़िल हुई : ''या अय्युहररसूल बल्लिग़ मा उन्ज़िल इलैइका मिररब्बिका वइन लम तफअल फ़मा बल्लग़्ता रिसालतहू'' (सूर–ए–माएदा आयत–67) यह एक ऐसा अहम फ़रीज़ा था जिसका अदा न करना रिसालत को न पहुँचाने के बराबर था और फिर ख़ुदावन्द इस आयत के आगे ही बयान फरमाता है : ''वल्लाहु यअसिमुका मिनन्नास'' यानी ख़ुदावन्द तुमको लोगों के शर से बचाएगा। इस आयत के इतनी खुली वज़ाहत के साथ नाज़िल होने पर पैग़म्बर (स0) के लिए उनका फरीज़ा रौशन हो गया। आयत के नाज़िल होने के फौरन बाद रसूले ख़ुदा (स0) ने क़ाफले को रोकने का हुक्म दिया और वह भी ऐसी हालत में कि जब हाजी एक ऐसी जगह के क़रीब हो चुके थे कि जहाँ से मदीना, मिस्र और इराक़ के मुसाफिर अलग–अलग हो जाते थे, अमीने वही (स0) फरमाते हैं कि आज वही के बयान के साथ–साथ आप लोगों से कुछ और भी कहना चाहूँगा। यह एक ऐसी जगह थी कि जहाँ रसूलुल्लाह (स0) जो कुछ इरशाद फरमाते वहाँ मौजूद हज़ारों सुनने वाले वापसी पर अपने इलाक़ों में दूसरों तक पहुँचाते और फिर आख़िरकार मक़ामे ग़दीरेख़ुम पर सब क़ाफले जमा हो गए मौसम बहुत गर्म था और लोगों को बहुत बचैनी से इस बात का इन्तिज़ार था कि आख़िर कौन सा हुक्मे इलाही है कि जिसके लिए रसूले ख़ुदा (स0) ने तमाम क़ाफलों को रोका है। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) हज़ारों लोगों के दरमियान में से मिम्बर पर तशरीफ ले गये कि जो पालान शुतर का बना हुआ था रसूले ख़ुदा ने एक नज़र अपने चारो तरफ की भीड़ पर घुमाई कि जिस पर ख़ामोशी छायी थी और सब लोगों की निगाहें पैग़म्बरे इस्लाम (स0) पर जमी हुईं थीं ऐसे आलम में रसूले ख़ुदा ने इरशाद फरमाना शुरु किया और सबसे पहले ख़ुदा की हम्द व सना की फिर अपनी सदाक़त की बारे में लोगों से ज़बानी नयी तरह से बैअत ली लोगों ने यह आलम देखकर रोना शुरु कर दिया इसी दौरान रसूले ख़ुदा (स0) ने भीड़ पर नज़र डाली और हज़रत अली (अ0) को अपने पास बुलाया हज़रत अली (अ0) रसूले ख़ुदा के पास मिम्बर पर उनके बराबर में आ खड़े हुए इसके बाद रसूले ख़ुदा (स0) ने लोगों से फरमाया : ''या अय्युहन्नास मन कुन्त मौलाहु फहाज़ा अलिय्युन मौला'' और फरमाया कि ख़ुदाया उन लोगों को दोस्त रख कि जो अली (अ0) को दोस्त रखते हों और उन लोगों से दुश्मनी रख जो अली (अ0) से दुश्मनी रखते हैं और तमाम बातें पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने इस हालत में इरशाद फरमायीं कि जब पैग़म्बरे इस्लाम (स0) हज़रत अली (अ0) के हाथ को अपने हाथ में लेकर ऊपर उठाए हुए थे रसूलुल्लाह (स0) की इस बातचीत के ख़त्म होते ही एक ख़ेमा बनाया गया कि जिसमें लोगों ने क़ाफलों की सूरत में आना शुरु किया और लोगों ने हज़रत अली (अ0) के हाथ पर इस उनवान से कि वह रसूलुल्लाह (स0) के बाद उनके जानशीन और ख़लीफा–ए–बरहक़ हैं, बैअत की।

□□□

इमाम मो0 बाक़िर (अ0)

की शख़्सियत का इज्तेमाई पहलू

आली जनाब मौलाना सै0 इम्तियाज़ हैदर रिज़वी साहब क़िब्ला

इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) की शख़्सियत के इज्तेमाई पहलू से हमारी मुराद दौराने इमामत में उम्मते इस्लामी के साथ आपका रवैय्या और आप (अ0) का सुलूक क्या है? बारहा इस नुकते के मुताल्लिक़ ताकीद की है कि अइम्मा–ए–मासूमीन एक किताब के मुकर्रर नुस्खे़ की तरह हैं अमल और फ़िक्र में मसावी हैं सिर्फ इस फर्क़ के साथ कि मुख़्तलिफ क़िस्म के हवादिस जो कि हर ज़माना में वाक़े होते रहते हैं उनकी वजह से ज़िम्मेदारी और हालात भी मुख़्तलिफ हो जाते हैं।

इस बाब में आपकी समाजी काविशें और इस ज़माने के लोगों के साथ आपकी सामाजियात के मुताल्लिक़ हम इशारा करेंगे।

अः– इमाम सादिक़ (अ0) फरमाते हैं :– एक रोज़ अपने वालिद के पास आया, तो देखा कि आप मदीने के फक़ीरों के दरमियान 8 हज़ार दीनार तक़सीम करने में मसरूफ हैं और फिर 11 आदमियों पर मुश्तमिल एक ख़ानदान को आज़ाद फरमाया जोकि सब के सब गुलाम थे।

(बहारुल अनवार जिल्द–46 बाब अख़लाक़ व सीरत इमाम मो0 बाक़िर)

बः– हसन बिन कसीर कहते हैंः– मैं अबुजाफर मोहम्मद बिन अली (अ0) के पास गया और तही दस्ती और भाई की ज़्यादती की शिकायत की, हज़रत ने फरमाया :– बहुत बुरा है वह भाई जो मालदारी और बेनियाज़ी के आलम में तो तुम्हारे साथ रहे और फक़ीरी और तन्गदस्ती के वक़्त साथ छोड़ दे। फिर आपने अपने गुलाम को हुक्म दिया, वह एक छोटी थैली लाया जिसमें सात दिरहम थे, मुझ से फरमाया :– इसको लो और ख़र्च करो, जिस वक़्त ख़त्म हो जाए तो मुझे बताना।(इरशाद मुफीद, बाब फ़ज़ाएल इमाम मो0 बाक़िर अ0)

सः– अम्र बिन दीनार और अब्दुल्लाह बिन उबैद कहते हैं :– जिस वक़्त मोहम्मद बिन अली (अ0) की ख़िदमत में पहुँचता तो आप पैसा या लिबास या कोई हदिया अता करते और फरमातेः– तुम्हारे यहाँ आने से पहले ही यह तुम्हारे लिए अलग रख दिया गया था।

(इरशाद मुफीद, बाब फज़ाएल इमाम मो0 बाक़िर अ0)

दः– सुलेमान बिन क़रम कहते हैं :– अबुजाफर मोहम्मद बिन अली (अ0) कभी 500, कभी 600 और कभी 1000 दिरहम इनाम के तौर पर हमें अता करते थे, और कभी–कभी अपने भाइयों और अपने एलचियों को हदिया देते या जिनको आप से उम्मीद थी उनके साथ सिल–ए–रहमी करने से नहीं थकते थे। (बहारुलअनवार, जिल्द–46)

हः– आप (अ0) की कनीज़ सलमा कहतीं हैंः– आप (अ0) के भाई या दोस्त जब भी आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते तो बग़ैर अच्छी ग़िज़ा खाये और उम्दा लिबास हदिया लिए उनको घर से बाहर आने नहीं दिया जाता। मैं आप (अ0) से अर्ज़ करती : मौला थोड़ा सा इन मामलों से बचाकर रखिए, तो आप फरमाते : दुनिया की नेकी भाइयों और दोस्तों को हदिया देने के अलावह और क्या हो सकती है?

सलमा फिर कहतीं हैं :– आप कभी 500 और कभी 600 और कभी 1000 दिरहम अपने दोस्तों और भाइयों को इनाम देते थे। इमाम बाक़िर (अ0) अपने दीनी भाइयों की सोहब्त व हमनशीनी से ख़स्ता नहीं होते थे और फरमाते थेः– अपने दोस्त के दिल में अपनी मोहब्बत का अन्दाज़ा करना चाहते हो तो देखो तुम्हारे दिल में

उसकी किस क़दर मोहब्बत है।

आपके घर कभी नहीं सुना गया कि कहा जाए :– ऐ साएल! खुदा तुझे बरकत दे, या ऐ साएल! यह ले ले बल्कि आप (अ0) फरमाते थेः– उनको उनके अच्छे नाम से पुकारो।(बहारुलअनवार जिल्द–46)

अवाम के साथ आपके सुलूक व रवैय्ये की ये चन्द मिसालें थीं, जिनको आपने मुलाहेज़ा किया।

इमाम (अ0) के रवैय्ये व रविश का सही अन्दाज़ा उस वक़्त पता चलेगा जब इस नुक्ते की तरफ तवज्जो दिलाएँ कि इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) माली लिहाज़ से ऐसे न थे कि दूसरे आपसे हसद करते, बल्कि जैसा कि इमाम जाफर सादिक़ (अ0) फरमाते हैं :– मेरे वालिद अपने घराने में सबसे कम माल रखते थे और सबसे ज़्यादा ख़र्च करते थे।

(अअ्यानुश्शीआ जिल्द–4 पेज–21 प्रकाशन–3)

लिहाज़ा इमाम (अ0) की तरफ से इस तरह की बख़्शिश व अता और इसके साथ सख़्ती और मुश्किल को बर्दाश्त करना, बेइन्तहा दौलत का नतीजा न था, बल्कि आप (अ0) यह सारे इक़दामात बहुत ही कम और महदूद पैसे में करते थे, क्योंकि आप (अ0) के नज़रिये के मुताबिक़ माली कमज़ोरी, इज्तेमाई मुश्किलात को हल करने से फरार होने का सब्ब नहीं बन सकती।

इमाम इस नज़रिये के इन्तेख़ाब के ज़रिए चाहते थे कि माली मुश्किलात में गिरफ्तार अवाम को किसी हद तक नजात दें ख़ास तौर से उन मुश्किलों से जो हाकिमे वक़्त के निज़ाम की ज़ालिमाना सियासत के नतीजे में अवाम के लिए, और ख़ास तौर से शीओं के लिए पैदा हो गयी थीं।

इस मुश्किल के मुताल्लिक हज़रत का सबसे बड़ा नारा रसूले अकरम (स0) का कलाम था।

सबसे मुश्किल तीन काम हैं एक–माल व दौलत में अपने को दोस्तों के साथ मसावी रखना, दो–लोगों के हुक़ूक़ अदा करना, तीन–हर हालत में ख़ुदा की तरफ तवज्जो रखना। (इरशाद मुफीद)

इमाम बाक़िर (अ0) को बहुत इश्तियाक़ था कि अपने बाईमान पैरोंकारों को लोगों के साथ समाजियात का सबसे अच्छा तरीक़ा सिखाएँ। इन तालीमों का कुछ नमूना मुलाहेज़ा फरमाएँ :–

तीन चीज़ें दुनिया व आख़ेरत में नेक शुमार की गयी हैं। एक–जिसने तुम पर सितम किया उसको माफ कर देना, दो–जिसने तुमसे ताल्लुक़ तोड़ा तो उसके साथ ताल्लुक़ बरक़रार रखना, तीन– जो तुम्हारे साथ जिहालत के साथ पेश आया हो उसके साथ मेहरबानी से पेश आना। (तोहफुल उक़ूल)

जो भी अपने मुसलमान भाई की मदद करने से गुरेज़ करे या उसकी ज़रूरत को दूर करने (भले ही वह ज़रूरत पूरी हो या न हो) की कोशिश छोड़ दे, तो वह ऐसी ज़रूरत में गिरफ्तार होता है कि अजर का तो सवाल ही पैदा नहीं होगा बल्कि गुनाह करने वाला भी हो जाता है, और जो भी बन्दा राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने में कन्जूसी करेगा उसका कई गुना खुदा की नाराज़गी के राह में ख़र्च कर देता है। (तोहफुल उक़ूल, हराफी)

आप (अ0) की एक बहुत ही मशहूर आदत का यहाँ तज़किरा मुनासिब होगा :–

किसी नसरानी ने आप (अ0) की इहानत की ग़र्ज़ से कहा :– आप (अल्लाह की पनाह) ''बक़र'' (यानी बैल) हैं? तो आप (अ0) ने फरमायाः– मैं बाक़िर हूँ।

तुम बावरचिन के बेटे हो?

हाँ! मेरी माँ खाना पकाती थीं।

तुम उस औरत के बेटे हो जिसकी जिल्द सियाह और जो बेकार बातें करती थीं?

अगर तूने दुरुस्त कहा हो तो ख़ुदा मेरी माँ की मग़फिरत करे और अगर झूठ कहा तो ख़ुदा तुझ को माफ करे।

(मनाक़िब आले अबी तालिब अ0 जिल्द–3)

उस ईसाई शख़्स ने इमाम बाक़िर (अ0) की शख़सियत व अज़मत व फज़ीलत और आप (अ0) के दीन की हक़्क़ानियत का मुशाहेदा करने के बाद अपने अक़ीदे को छोड़कर आपके हुज़ूर में ही इस्लाम क़ुबूल कर लिया। □□□

मेरा मज़हब

मुफ़क्किरे यगाना जनाब सलामत रिज़वी साहब

हम मुवह्हिद हैं हमारा केश है तरके रुसूम।

मैं भी इसी ज़ुमरे में शामिल हूँ। इस ज़ुमरे में लोग रवादार होते हैं लेकिन रवादारी का यह मतलब हरगिज़ नहीं होता कि

क़शक़ा खींचा, दैर में बैठा

इस दुनिया में बहुत से ऐसे लोग हैं जो इस धोके में पड़े हैं कि वह ख़ुदा, ख़ुदा की मर्जी और ख़ुदा की नाराज़गी के बारे में बहुत अच्छी तरह से वाक़िफ हैं जो सही नहीं है।

यह बात मानना पड़ेगी कि मज़हब जिस सूरत से हम तक तारीख़ी तबदीली के साथ पहुँचा है इसमें बहुत सी ऐसी बातें शामिल हो गयीं है जो मज़हब की अख़लाक़ी और रूहानी हदों और दाएर–ए–अमल से ख़ारिज हैं। मसलन ज़मीन चपटी है या गोल? या ज़मीन गाय की सींग पर धरी है और जब वह सींग बदलती है तो ज़लज़ला आता है। भला इन मोहमल और ख़ुराफात बातों का तअल्लुक़ अख़लाक़ियात और रूहानियात से क्या है? मज़हब दरअस्ल नाम है अख़लाक़ी सच्चाइयों को जिन पर मज़हबी चौधरियों ने एक ऐसा पर्दा डाल दिया है और ऐसी ईजादात कर रखी हैं कि वह उनसे रोटी कमा सकें।

मज़हब पर जब उंगली उठायी जाती है और यह अन्दाज़ा लगाया जाता है कि हमारे अक़ीएद व मुसल्लमात किस हद तक अक़्ल से क़रीब हैं तो मज़हब के ठेकेदार ज़बान बन्द कराने के लिए या इस्तेदलाल को हवा में उड़ाने के लिए सबसे पहली चोट जो मारते हैं वह इलहाद व दहरियत की होती है इसलिए पहले ख़ुदा के ख़यालत पर जहन को साफ कर लिया जाए तो बेहतर है।

वजूदे ख़ुदा के क़ायल होने के साथ मेरा ख़याल ज़रा अलग है। यह कहना कि ख़ुदा सिर्फ मेरा है ''रब्बुल आलमीन'' के फ़रमाने ख़ुदावन्दी के ख़िलाफ बल्कि उसकी तकज़ीब की तरह है। हमें ख़ुदा को समझने के सिलसिले में रवादार होना चाहिए। हम ग़ैरों को अपनी अज़ान उसी वक़्त सुना सकेंगे जब हम ख़ुद नाक़ूस की आवाज़ सुन सकें।

बहैसियत इन्सान हर शख़्स चाहे वह हिन्दू हो कि ईसाई, सिख हो कि यहूदी, सुन्नी हो कि शीआ, ख़ुदा के नज़दीक एक है।

ख़ुदा की चाहता इन्सान की कामयाबी और इस्लाह है। ख़ुदा ने जिस अम्र को अपनी ख़ुशनूदी बताया है वह दरअसल हमारी बेहतरी से मुताल्लिक़ है और जिस अम्र को अपनी नाराज़गी बताया है वह हमारे नुक़सान से मुताल्लिक़ है।

तस्फिया–ए–अख़लाक़ और तज़किया–ए–नफ्स के लिए यक़ीनन इस्लाम से बेहतर कोई मज़हब नहीं है इसलिए हर इन्सान का फितरी फर्ज़ है कि वह इस मज़हब को अख़्तियार करे।

इस्लाम नाम है सलामती का। और सलामती व रवादारी एक ही सिक्के को दो रुख़ हैं। लेकिन दुनिया की लालच और शान की चाहत ने हमें इनसे दूर कर दिया है। इस्लामी

यक्जहती की रूह कमज़ोर हो गयी है। कीना, बुग्ज़, फसाद और नफ्स की गुलामी की लानत किसी नुक़ते पर मुत्तहिद नहीं होने देती। अगर ऐसा न होता तो डाक्टर अम्बेडकर यह कहकर इस्लाम के रास्ते पर आते–आते न हट जाते कि ''इस्लाम में बहुत सी जमातें हैं आख़िर किस जमात का साथ दूँ?'' और गाँधी जी के बेटे जिस वक़्त कुबूले इस्लाम करके दोबारा अपनी पुराने मज़हब पर पलटे तो यह बयान न देते कि ''मैंने मुसलमानों में कोई अख़लाक़ी बुलन्दी ऐसी नहीं पायी जो दूसरे मज़हब वालों में न हो।''

मौलाना अबुलकलाम आज़ाद मरहूम ने मज़हब की ख़ानाबन्दी इस तरह की है :–

''एक भुगोलिक मज़हब है कि ज़मीन के किसी ख़ास टुक्ड़े में एक आम रास्ता बन गया है सब उसी पर चलते हैं आप भी चलते रहिये।''

''एक जनगणना का मज़हब है कि जनगणना के काग़ज़ात में एक ख़ाना मज़हब का भी होता है उसमें मज़हबे इस्लाम दर्ज करा दीजिये।''

''एक रसमी मज़हब है कि रसमों और तक़रीबों का एक साँचा ढल गया है उसे न छेड़िये और उसी में ढलते रहिये।''

''और एक क़िस्म है हक़ीक़ी मज़हब...... जो सिर्फ इल्म और तहक़ीक़ से पैदा होता है हक़ीक़ी मज़हब और हक़ीक़ी इल्म की एक ही मन्ज़िल है।''

मौलाना इसके आगे और लिखते फरमाते हैं :–

''जब तक मौरूसी अक़ाएद के जमे हुए और तक़लीदी ईमान की चश्म बन्दियों की पट्टियाँ हमारी आँखों पर बंधी रहेंगी हम यह सुराग़ नहीं पा सकते। लेकिन जैसे ही यह पट्टियाँ खुलने लगती हैं, साफ दिखायी देता है कि राह न दूर थी और न खोई हुई और फिर हम तक़लीदी अक़ीदे से तहक़ीक़ी अक़ीदे पर गामज़न हो जाते हैं।''

मेरा अपना ख़याल यह है कि मज़हब बिलकुल इन्फेरादी और ज़ाती चीज़ है। हर शख़्स पर लाज़िम है कि वह मज़हब के मुताल्लिक़ अपना नुक़्त–ए–नज़र ख़ुद तै करे। मैं मुसलमान हूँ इसलिए नहीं कि मेरे बाप मुसलमान थे या मेरा ख़ानदान मुसलमान था। क़ुर्आन मजीद ने ''मज़हबे आबा'' को अच्छा नहीं कहा है बल्कि ख़ुद ग़ौर व फ़िक्र करके एक मज़हबी रास्ता तै करने का हुक्म दिया है।

अब रह गया सवाल ''तरके रुसूम'' का। तो मैं बहुत सी रसमें तर्क कर चुका हूँ। तहक़ीक़पसन्द शीआ हूँ इसलिए जिस आलिम या दानिश्वर की बात पसन्द आती है अपना लेता हूँ। नौरोज़ को नहीं मानता, शबे बराअत की हलवा पूरी भी नहीं करता, 22 रजब के कूँडे भी नहीं करता। इन सब चीज़ों के ना मानने को मेरे पास जवाज़ है सिर्फ एक जवाज़ सुन लीजिये।

22 रजब

मशहूर शीआ मोहक़्क़िक़ और मुजतहिद नासिरुल मिल्लत मरहूम ने एक इस्तेफ़सार के जवाब में जो 22 रजब की नज़र के मुताल्लिक़ था वह इस्तेफ़सार जवाब के साथ दर्ज ज़ेल है :–

''सैय्यद हसन अब्बास साहब मूसवी की इदारत और मौलाना सै0 नासिर हुसैन साहब की सरपरस्ती में शाए शुदा अख़लाक़ी, समाजी, इल्मी माहवार रिसाला ''अश्शहीद'' आगरा की जिल्द–1 नम्बर–10 24 ई0 के रजब नम्बर में पेज–2 पर

बाबुल मसाएल में पहला सवाल जो मौलाना सैय्यद नासिर हुसैन साहब से किया गया और जिसका जवाब उन्होंने दिया वह यह है :–

सवाल

क्या इरशाद है इस मसले में कि बाइसवीं रजब हस्बे रिवाज आम व ख़ास तौर पर इमाम जाफर सादिक़ (अ0) की नज़र दिलवायी जाती है और एक क़िस्सा बतौर मोअजज़ा आँहज़रत बवक़्ते नज़र पढ़ा जाता है। आया नज़र इस तरह से और उस क़िस्से पर एतक़ाद बहैसियत मोअजज़ा रखना दुरुस्त है या नहीं। वह क़िस्सा मशहूर है ग़ालिबन जनाब भी वाक़िफ हों। और आया यह क़िस्सा किसी मोअतबर किताब में नज़रे आली से गुज़रा?''

अलजवाब वबिल्लाहित्तौफीक़

''नज़र जनाब इमाम जाफर सादिक़ (अ0) हर मुतबर्रक ज़माने में मुनासिब है लेकिन ख़ास तौर से 22 रजब की यह अक़ीदा रखना और हिकायत को जो अवाम में मशहूर है मुस्तनद क़रार दिया जाना जाएज़ नहीं है और यह हिकायत अहले तशैय्युअ की किसी किताब में मेरी नज़र से नहीं गुज़री और बज़ाहिर अस्ल इसकी मुख़ालिफीने मुतसव्वफीन से है।'' वल्लाहु आलम

यह पढ़ने के बाद मैंने कूँडे बन्द कर दिये। हाँ कोई बुलाए तो खाने ज़रूर चला जाता हूँ।

ऐसा ही कुछ नौरोज़ के बारे में है। यह मजूसियों का त्योहार है, इसको ''नौरोज़े जमशेदी'' कहते हैं। कहा जाता है कि वाक़ेआ–ए–ग़दीर जिस दिन हुआ..............यानी 18 ज़िलहिज्जह मुताबिक़ 21 मार्च था। एलाने ग़दीर के मुताल्लिक़ कहा जाता है कि वह ज़ोहर से कुछ पहले किया गया था। अब अगर इस एतबार से ख़ुशी की नज़र दिलाना है तो वह वक़्ते ज़ोहर से कुछ क़ब्ल होना चाहिए। हर साल सुवर की सवारी, हाथी की सवारी या कुत्ते की सवारी, रंग और बदलते हुए वक़्त पर नज़र दिलाना मजूसियों और नुजूमियों की पैरवी है जो अज़रु–ए–फरमाने अली इब्ने अबी तालिब (अ0) नाजाएज़ और हराम है।

(देखिये ख़ुत्बा नहजुल बलाग़ह)

लेकिन

अज़ादारी करता हूँ, मज्लिस करता हूँ, मातम करता हूँ, कभी–कभी मज्लिसों में शिरकत भी करता हूँ, इसको मैं रसम समझता हूँ न रिवाज, बल्कि यह हमारी पहचान है, शीओयत की पहचान है। मज्लिसों में कभी–कभी शिरकत की वजह यह है कि आज कल के ज़ाकिरों से (इल्ला माशा अल्लाह) कुछ मिलता ही नहीं। पहले के ज़ाकेरीन साल भर किताबें पढ़ते थे और फिर उनका निचोड़ या रस या यूँ कहिये कि प्याले में दरया को बन्द करके पेश करते थे और हमारे इल्म व मालूमात में इज़ाफा करने के साथ–साथ हमारी रूह को ताज़गी और जोश भी बख़्शते थे। आज यह चीज़ खो गयी है और सच बात यह है कि जो लोग मौलाना कल्बे हुसैन साहब मरहूम या मौलाना सैय्यद अली नक़ी साहब मरहूम को सुन चुके हैं उनको आज की तक़रीरों में न मज़ा आता है न लुत्फ। बिलकुल इसी तरह जिस तरह अनीस के मरसियों के बाद हर शाएर का मरसिया फीका लगता है।

तक़लीद

मैं बहरहाल इस ख़याल को सही नहीं मानता कि जो कुछ ज़मान–ए–क़दीम से होता चला आ रहा है उसको क़ाएम ही रहना चाहिए।

महेर लाखों का होता था अब भी हो, नाम व दिखावे के लिए दहेज़ भी वतन के भाईयों की तरह हो, वग़ैरा। अगर यह रसमें हमारी ज़िन्दगी की लिए ज़हरे क़ातिल हैं तो फ़ना होने के क़ाबिल हैं। यह कहना कि उनको कैसे छोड़ें यह तो बुज़ुर्गों की वक़्त से चली आ रही हैं वैसा ही है जैसा मुश्रिकीन कहते थे कि हमने अपने बाप–दादा को जिस रास्ते पर चलते देखा है उसी रास्ते पर चलते रहेंगे।

तक़लीद न सिर्फ उमूरे मज़हबी में बल्कि हर चीज़, हर काम, हर इल्म और हर फन में ऐसी ज़रूरी चीज़ बन गयी है कि उसने हमारी अक़लों और तहक़ीक़ी सलाहियतों को बेकार कर दिया है।

''ख़बरदार! सलफ के ख़िलाफ को बात ज़बान पर न लाना।''

मगर हक़ीक़त यह है कि –

दरायत व इज्तेहाद............रिवायत व तक़लीद पर मुक़द्दम है।

इल्म कोई ठहरी हुई चीज़ नहीं है। पालने से क़ब्र तक हासिल करने के बाद भी इन्सान प्यासा ही जाता है। इसके हुसूल के लिए सख़्त से सख़्त मेहनत, परेशानी और बेअन्दाज़ा क़ुर्बानी की ज़रूरत होती है।

मज़हब व अक़ल के सिलसिले में एक बड़े आलिम की हकीमाना बात भी सुन लीजिये वह फरमाते हैं :

''अगर हम ज़िन्दगी की नागवारियों में सहारे के लिए नज़र उठायें तो किस तरफ उठायें? हमें मज़हब की तरफ देखना पड़ता है। यही दीवार है जिससे एक दुखती पीठ टेक लगा सकती है। बिला शुबह मज़हब की वह पुरानी दीवार जिसकी न समझ में अपने वाली कारफरमाइयों का यक़ीन हमारे दिलो दिमाग़ पर छाया रहता था अब हमारे दरमियान बाक़ी नहीं है। अब मज़हब भी हमारे सामने आता है तो अक़लियत और मनतिक़ की एक सादा और बेरंग चादर ओढ़कर आता है, हमारे दिलों से ज़ियादा हमारे दिमागों को मुख़ातब करता है, ताहम अब भी तसकीन और यक़ीन का सहारा मिल सकता है तो उसी से मिल सकता है।''

रस्म व रवाज और तवह्हुमात

बक़ौल सरसैय्यद मरहूम :–

''क़दीम तालीम किताब ख़्वाँ बना रही है। लेकिन तालीम का असल मक़सद यह नहीं है। इसका मक़सद लोगों को क़दामत पसन्दी और औहाम व तारीकी के ग़ारों से निकालना होना चाहिए था और हमें ख़ुशी है कि रिवायात व अक़ाएद का इल्मी नुक़त–ए–नज़र से मुताला अब ज़ियादा ज़ोर पकड़ता जा रहा है।''

और बक़ौन नज्म आफ़न्दी मरहूम –

काबे के बुत तो कुछ न थे, तूने मिटाया उन्हें
सबसे बड़े बुत जो थे रसमो रिवाजे कोहन

और यह रसम व रिवाज कुछ जाहिलाना अक़ाएद की वजह से हैं और कुछ अवाम के मेल–जोल से लेकिन आज के बदले हुए हालात की वजह से बहुत से रस्मो रवाज और तवह्हुमात दम तोड़ चुके हैं। और हमें उम्मीद रखना चाहिए कि इल्म की फरावानी के साथ बाक़ी माँदा बेहूदा रसमें और जाहिलाना तवह्हुमात भी दम तोड़ देंगे। बक़ौल सरदार जाफरी –

जेहल से पैदा हुए हैं इल्म से मर जाएँगे
रसम व रिवाज और तवह्हुमात को राएज

हुए हज़ारों साल का ज़माना दरकार होता है। क़दीम तहज़ीबों का मज़हब और उनके रसमो रिवाज तारीख़ की सूरत में हमारे सामने इसी ग़र्ज़ से पेश किये जाते हैं ताकि हम उनका मुताला कर सकें। इन ही रसमों के राएज करने में रस्म व रिवाज ने जन्म लिया और जब भी इन रस्म व रिवाज में कोई तबदीली आइ तो वह तवह्हुम बन गये।

एशिया की तवह्हुम परस्ती पर जोश ने तहरीर किया है :–

''एशिया............जो रिवायात, अक़वाल और औहाम का पाया–ए–तख़्त है, यहाँ हज़ारों साल से भूतों, चुड़ैलों, शहीद मुर्दों, जिनों और फरिश्तों की कहानियों की छाओं में बच्चों को सुलाया जा रहा है, यहाँ बड़े–बड़े सूफी और शाएर हिकमत पर जुनून और अक़्ल पर इश्क़ को तरजीह देते आ रहे हैं। यहाँ अलिफ लैला, इन्द्र सभा, चहार दुरवेश और तिलिस्मे होशरुबा के खुराफात को ज़हनों में पाला पोसा जा रहा है, यहाँ बराहीन क़ातेआ की गर्दनों पर कश्फ व करामात की छुरियाँ चलायी जाती हैं।''

क़दीम तहज़ीब के मज़ाहिब का मुताला करने पर यह हर शख़्स यह समझ सकता है कि यह सारे मज़ाहिब डर, ख़ौफ, लालच, नफा और नुक़सान की बुनियादों पर ज़हूर में आए। और यह कि हर मज़हब में मज़हब की लगाम एक मख़सूस तबक़े के हाथों में रही। और यह तबक़ा जलबे मनफअत के लिए अवाम कलअनआम को हर तरह से शीशे में उतारता था। सबज़ बाग़ दिखाता था और खुदाओं को खुश करने के लिए उनसे तरह–तरह की रसमें कराता था। भोले–भाले अवाम को भूत, प्रेत, चुड़ैल और बदरूहों से डराता था और फिर उनके असरात को ज़ाएल करने के लिए तरह–तरह के अमल, नक़्श, टोने, टोटके अन्जाम देता था और इन तमाम बातों में ख़ास बात यह थी कि अवाम को यह हक़ हासिल नहीं था कि वह अज़ख़ुद ख़ुदाओं को ख़ुश करने के लिए यह रसमें अन्जाम दीं। यह सारे काम सिर्फ उसी मख़सूस तबक़े ही के ज़रिए मुमकिन थे।

सितारों की गर्दिश पर चूँकि यक़ीन था इसलिए हर काम के लिए एक शुभ घड़ी मुक़र्रर थी। यह शुभ घड़ी भी इसी तबक़े को क़ब्ज़े में थी। काम को मख़सूस तारीख़ और वक़्त पर शुरु करना और फिर हर साल इसका एआदा त्योहार कहलाते और इन त्योहारों को मुनासबत से ख़ाना, कपड़े और दूसरी चीज़ों को इस्तेमाल रस्म व रिवाज कहलाता था।

सितारा परस्ती इस्लाम ने हराम क़रार दी। इस सिलसिले में हज़रत अली (अ0) का एक ख़ुत्बा क़ाबिले मुलाहेज़ा है।

जब आप ने ख़वारिज से जंग करने की ख़ातिर निकलने का इरादा किया तो एक शख़्स ने कहा ''ऐ अमीरुलमोमिनीन अगर आप इस वक़्त निकले तो इल्मे नुजूम की रु से मुझे अन्देशा है कि आप अपने मक़सद में कामयाब व कामरान नहीं हो सकेंगे।'' जिस पर आप ने फरमाया :–

''क्या तुम्हारा ख़याल है कि तुम उस घड़ी का पता देते हो कि अगर कोई इसमें निकले तो उसके लिए कोई बुराई न होगी और उस लम्हे से ख़बरदार करते हो कि अगर कोई इसमें निकले तो उसे नुक़सान होगा। तो जिसने उसे सही समझा उसने कुर्आन को झुठलाया और मक़सद पाने और मुसीबत के दूर करने में अल्लाह की मदद से बेनियाज़ हो गया। तुम अपनी इन बातों से यह चाहते हो कि जो तुम्हारे कहने पर अमल करे वह अल्लाह को छोड़कर तुम्हारे गुन गाए, इसलिए कि तुमने अपने ख़याल में उस साअत का

पता दिया कि जो उसके फाएदे और नुक़सान का ज़रिया बना।''

(फिर आप लोगों की तरफ मुतवज्जह हुए और फरमाया)

''ऐ लोगों नुजूम के सीखने से परहेज़ करो मगर इतना कि जिससे ख़ुशकी व तरी में रास्ते मालूम कर सको इसलिए कि नुजूम का सीखना कहानत और ग़ैबगोई की तरफ ले जाता है और हुक्म में मिस्ल काहिन के है और काहिन मिस्ल साहिर के और साहिर मिस्ल काफिर के और काफिर का ठिकाना जहन्नम है, बस अल्लाह का नाम लेकर चल खड़े हो।''

(नहजुल बलाग़ह ख़ुतबा नम्बर–77)

मज़कूर–ए–बाला ख़ुतबे की रौशनी में ग़ौर कीजिये तो मानना पड़ेगा कि पेशगोई करने वाले तमाम ''इल्म'' चाहे नुजूम हो या जफर, रमल हो या फ़रासतुलयद सब हराम हैं और उनके आमिल काफिर और जहन्नमी।

अब साअत, दक़ीक़ह, रंग और सवारी देखकर नौरोज़ में ख़ुद उसी की नज़र देना जो इसके ख़िलाफ था किस हद तक दुरुस्त है?

इल्मे नुजूम की दो क़िस्में

मशहूर आलिम, मेरे मोहतरम दोस्त और हमपेशा आली जनाब क़ाज़ी अतहर साहब मुबारकपुरी लिखते हैं :–

''इल्मे नुजूम की दो क़िस्में हैं, एक से सितारों के ख़वास व असरात मालूम करते हैं और लोगों को तवालेअ व बुरूज बताकर साद व नहस और उनकी अच्छाई और बुराई की ख़बर देते हैं यह क़िस्म इस्लामी नुक़्त–ए–नज़र से सरासर हराम है।

इल्मे नुजूम की दूसरी क़िस्म में सितारों की रफ्तार से बहस होती है। यह हिसाब और तजुर्बे के बिना पर है। इसमें ग़ैबदानी का दावा नहीं होता। चाँद कब निकलेगा? सूरज और चाँद को गहन कब होगा यह सब सितारों की चाल के हिसाब पर मौक़ूफ है। इस इल्मे नुजूम की ज़रूरत है। हमारे मदरसों में अब से कुछ दिन पहले इसकी बाक़ाएदा तालीम दी जाती थी।

आज कोई ऐसी बात जिस पर सच होने का यक़ीन न हो जाए सच नहीं मानी जा सकती इसलिए हमें अपने एतक़ादात का जाएज़ा लेना ज़रूरी है, तारीख़हाए सअद व नहस, क़मर दर अक़रब, तहतुश्शुआअ और इसी क़िस्म के दूसरे मोहमलात पर अमल करना एक न ग़ैर मन्तिक़ी बात है।

बाईहमा

मज़हब इन्सान को अख़्लाक़ सिखाता है। उन आला इक़दार से पहचान कराता है जो इंसान की दीनी और दुनियावी ज़िन्दगी को ख़ुशगवार और कामयाब बना सकें।

मज़हब से इंसान में रवादारी, बराबरी, भाईचारगी, मुरव्वत और वतन से मुहब्बत के पाकीज़ा जज़बात पैदा होते हैं और सच तो यह है कि मज़हब ही की बदौलत यह बोलने वाला जानवर इंसान कहलाने का मुस्तहक़ है क्योंकि मज़हब इंसान में इंसानियत की ख़ुसूसियात पैदा करता है।

इसके बरअक्स

मज़हब से बेगाना रहकर इंसान औबाश, बदक़िमाश, बदअख़लाक़, बेमुरव्वत, बेग़ैरत, ज़ालिम और जुर्म पेशा बन जाता है और ऐसे अफराद समाज में नासूर की हैसियत रखते हैं।

□□□

''वमिन कुल्लि शैइन ख़लक़ना ज़ौजैनि लअल्लकुम तज़क्करून''

(अज़्ज़ारियात आयत—49)

काएनात में 'शादी' करने का दस्तूर

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

शादी का महत्तव – हदीसों की रोशनी में

इस्लाम में घरेलू सिस्टम से जुड़े सभी मुद्दे इन्शाअल्लाह सिलसिले से आगे बयान किये जायेंगे। अभी हदीसों (रसूल स0 और उनके मासूम अहलेबैत के पाक कथनों) की भरोसी वाली विश्वस्त किताबों से शादी की अहमियत और निकाह के फ़ायदे के बारे में कुछ हदीसें दुहरायी जा रही हैं। आपसे गुज़ारिश है कि आप इन हदीसों पर ग़ौर करें। मुम्किन है कि इस तरह आपको नैतिक और आचरण के मुद्दों की जानकारी हो जाय (यदि अभी तक नहीं है) और यह भी जान जायें कि किसी मज़हब के पास इस्लाम जैसा सुन्दर, तर्कसंगत और सूझबूझ वाला प्लान नहीं है।

रसूल (स0) से रिवायत है यानी आप (स0) का पाक बयान है जो दुहराया गया है :—

''चार मौक़ों पर इन्सान के लिए आसमान के दरवाज़े खुलते हैं – बारिश होने के वक़्त, जब बेटा प्यार से बाप के चेहरे को देखता है, जब काबे का दरवाज़ा खुलता है और निकाह के समय।

रसूल (स0) ने फ़रमाया है :—

'शादी करो, अपने बिनब्याहे बेटे बेटियों की शादी करो। एक मुसलमान के सौभाग्य की यह निशानी है कि किसी औरत से शादी का ख़र्चा उठाये। अल्लाह के नज़दीक उस घर से जो इस्लाम में निकाह से बसे, उससे ज़्यादा कोई चीज़ चहीती नहीं है।'

हज़रत मुहम्मद (स0) की सूक्ति है :—

'अपने बिनब्याहे मर्दों की शादी कर दो ताकि ख़ुदा उनके चाल—चलन को संवार दे, उनकी रोज़ी—रोटी में फैलाव कर दे और उनकी रु—रियायत बढ़ा दे।

हमारे प्यारे नबी (स0) का कहना है :—

'निकाह मेरी सुन्नत (सदावृति, चलन) है, जो मेरी सुन्नत से फिरा, वह मुझसे नहीं है।'

हमारे रसूल (स0) ने कहा है :—

'जिसने शादी कर ली उसने आधा दीन पा लिया, दूसरे आधे हिस्से के लिए अल्लाह का तक़वा (डर) अपनाये।'

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) का पाक कहना है :—

'एक आदमी मेरे पिताश्री हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की सेवा में आया, आप (अ0) ने उससे पूछा क्या बीवी रखते हो? उसने कहा कि नहीं। तो पिता श्री ने उससे फ़रमाया कि अगर मुझे दुनिया और उसमें जो कुछ है सब दे दिया जाये और एक रात बिना बीवी के बिताने को

कहा जाये, तो मैं उसे न मानूँगा। और बात आगे बढ़ाते हुए कहा कि शादी किये हुए एक मर्द की दो रकात नमाज़ उस बिनब्याहे मर्द की इबादत (भक्ति–उपासना) से ज़्यादा है जो रात भर इबादत करता है और दिन भर रोज़े रखता है। इसके बाद मेरे पिता श्री ने उसे सात दीनार दिये और कहा कि इससे अपने शादी का सामान जुटाओ क्योंकि रसूल (स0) ने फ़रमाया है कि शादी करो क्योंकि इससे रोज़ी–रोटी में फैलाव होता है।'

रसूल (स0) ने फ़रमाया है :–

'जवानों! जो भी तुममे से सकत और हैसियत रखता हो उसे शादी कर लेना चाहिए ताकि तुम्हारी आँखें कम से कम औरतों का पीछा करें और तुम्हारा दामन पाक रहे (चाल चलन सही रहे)'

हमारे सर्वश्रेष्ठ नबी (स0) का कहना है:–

'इस्लाम में खुदा की सबसे चहीती (प्रियतम) चीज़ शादी है।'

यह भी फ़रमाया :–

'जिसने शादी कर ली उसने आधी भलाई (शुभ मंगल) पा ली।'

महामहिम रसूल (स0) ने यह भी कहा है:–

'कोई भी जवानी में शादी नहीं करता मगर यह कि शैतान गुहार लगाता है कि हाय हो इस पर, इसने मुझसे अपना दो तिहाई दीन बचा लिया। अब बन्दे को बाक़ी एक तिहाई धर्म के लिए खुदा का तक़वा अपनाना चाहिए।'

हाँ तो शादी का इतना महत्व है, इस पर इतना ज़ोर दिया गया है। इससे औरत और मर्द को कितना फायदा पहुँचता है और इस्लाम ने इतनी ज़्यादा अहमियत बयान की है।

काश! समाज इस खुदाई और इन्सानी काम को आसान बनाने की कोशिश करता और अड़चने खड़ी करने और सकत–तोड़ शर्तें लगाने से बचता, अपनी सकत के लिहाज़ से रसमों को पूरा करता और इस बारे में कमख़र्ची से काम लेकर अपनी हैसियत से कार्रवाई करता ताकि लड़के–लड़कियाँ अपनी स्वभाविक व प्राकृतिक इच्छाओं को पूरा कर सकते, उनकी आशाएँ पूरी हो जातीं और उनका सेक्स, जो ख़ुदा की एक नेमत है, यह नेमत नकारने और ठुकराने से बच जाती, उनके पाक चाल–चलन गुनाह से गन्दे न होते। इच्छाओं का घुटकर रहना, स्वभाव सेक्स में घुमाव करना, गन्दगी बुराई का फैलना, गुनाह की लत, मोह, बलात्कार, हस्तकारी, दूसरों की इज़्ज़त पर हाथ साफ़ करना, विद्या और इबादत में सुस्ती, मानसिक (Mental) व मनोवैज्ञानिक (Psychological) रोगों का उभरना और ऐसी ही दूसरी मुसीबतों का सोता कहाँ से फूटता है?

इन सवालों के जवाब पहले चरण में कठोर स्टैण्ड/रवैये अपनाने वाले, रस्मों के बन्दी माँ–बाप से, दूसरे मरहले में ख़ुद उन लड़के लड़कियों से जो खुदा का डर नहीं रखने और तीसरे चरण में उन लोगों से माँगना चाहिए जो जवानों की शादी का सामान जुटा सकते है लेकिन ख़ुदा के लिए माल ख़र्च करने में कन्जूसी से काम लेते हैं। जो भी इस दुनिया में समझदारी भरा तर्कसंगत और मानने योग्य जवाब देगा क़यामत के दिन भी ख़ुदा की कचहरी और अदालत में यही जवाब देगा। □□□

इदारा

मुख्य समाचार

मौलाना कल्बे आबिद साहब की याद में अज़ीम मजालिस का उन्नीसवाँ दौर

उलमा का लिबास ज़ेबेतन करने वालों से क़ौम होशियार रहे : मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी इज्तेहादी साहब कराची

लखनऊ। आक़ा–ए–शरीअत मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी ताबा सराह की याद में 9, 10, 11 दिसम्बर 2005 ई0 को इमामबाड़ा ग़ुफ़रान मआब (रह0) में अज़ीम मजालिस का इन्एक़ाद हुआ। जिसमें पाकिस्तान से आए हुए मशहूर आलिमे दीन हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सैय्यद हसन ज़फ़र नक़वी साहब ने आज–कल के रौशन फ़िक्र नौजवानों को इस्लामी तालीमात की ख़ुसूसन कर्बला की अस्ली तालीमात को समझने की तलक़ीन करते हुए उन अफ़राद की मज़म्मत की जो उलमा का लिबास ज़ेबतन किए रहते हैं लेकिन इस्लामी तालीमात को फैलाने के बजाए उसमें अड़चनें पैदा करते हैं।

मौलाना हसन ज़फ़र साहब ने उलमा–ए–बरहक़ का ज़िक्र करते हुए कहा कि उन लोगों ने अपनी पूरी ज़िन्दगी मज़हबे हक़्क़ू को फैलाने में लगा दी इसके उलट कुछ उलमा नुमा अफ़राद हैं जो अहलेबैत से मुहब्बत का दावा तो करते हैं लेकिन उनकी तालीमात को फ़रोग़ देने और हक़ीक़ी तौर से अमल करने की तलक़ीन नहीं करते। मौलाना मौसूफ़ ने कहा कि जिसमें ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं है वह सच्चा इन्सान नहीं हो सकता। नौजवानों को आगाह करते हुए उन्होंने कहा कि वह उन मुल्लाओं से हाशियार रहें जो उलमा का लिबास ज़ेबतन तो करते हैं लेकिन अपनी बदज़बानी से समाज में तफ़रीक़ और फ़साद फैलाने की साज़िश किया करते हैं। उन्होंने कहा कि उलमा की ज़िम्मेदारी है कि वह नौजवानों को उन बातों से महफ़ूज़ रखें जो इस्लाम और समाज के ख़िलाफ़ हैं। नमाज़ और अज़ादारी का एक दूसरे से मुक़ाबला न करें। मौलाना हसन ज़फ़र साहब ने कहा कि कुछ लोग अपने ज़ाती फ़ाएदे के लिए यह सब हरकतें कर रहे हैं और उलमा की सफ़ में घुस कर गुमराही पैदा कर रहे हैं। वह मज़हब की आड़ में ग़ैर मज़हबी ख़यालात को फैला रहे हैं और ऐसे उलमा की मुख़ालफ़त कर रहे हैं जो राहे हक़ पर चलने की कोशिश में मसरूफ़ हैं।

अज़ीम मजालिस के तीन दिवसीय प्रोग्राम में दूर–दराज़ से आए हुए उलमा व ज़ाकेरीन ने बसीरतअफ़रोज़ बयानात से इत्तेहाद बैनुलमुस्लिमीन का भी सबक़ दिया। उलमा ने इन मजालिस के दौरान कहा कि मौलाना कल्बे आबिद साहब मरहूम की पूरी ज़िन्दगी इन्सानियत की बुनियाद पर थी। उन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी मुसलमानों के मुख़तलिफ़ फ़िरक़ों में इत्तेहाद के लिए गुज़ार दी। इन मजालिस में तीन दिन तक हज़ारों अफ़राद ने शिरकत की। पाकिस्तान के मशहूर नौहा गो रेहान आज़मी ने भी अपने कलाम से शुरका को मुस्तफ़ीज़ किया।

मजालिसे अज़ीम में हैदराबाद से आए हुए मौलाना सुहैल आफ़न्दी, मौलाना सफ़ी हैदर, मौलाना सफ़दर हुसैन, मौलान अतहर अब्बास, मौलाना कमालुद्दीन अकबर, मौलाना प्रोफ़ेसर अबुलक़ासिम, मौलाना हुसनुलहसन, मौलाना कल्बे रुशैद साहेबान व दूसरे उलमा–ए–केराम ने भी ख़िताब किया। पाकिस्तान के मशहूर शायर रेहान आज़मी, नफ़ीस हल्लौरी, नायाब हल्लौरी, तनवीर नगरौरी और ज़ामिन हुसैन साहेबान ने शोहदा–ए–कर्बला को ख़िराजे अक़ीदत पेश किया। प्रोग्राम की निज़ामत मौलाना आज़िम हुसैन ज़ैदी ने की और इस मौक़े पर कसीर तादाद में अक़दतमन्दों के अलावह तमाम मोअज़्ज़ि अफ़राद ने शिरकत की।

मौलाना ख़ादिम हुसैन नक़वी इन्जीनियर की वफ़ात

लखनऊ। मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद साहब क़िब्ला की बहुत से तहरीकों में मददगार मौलाना सैय्यद ख़ादिम हुसैन साहब का अचानक दिल का दौरा पड़ने से इन्तेक़ाल हो गया। 19 दिसम्बर 2005 को उलमा–ए–केराम की मौजूदगी में मौलाना मरहूम को उनके वतन में ख़ुद मौसूफ़ के ज़रिये तामीर करवायी गयी मस्जिद में नमनाक मजमे के दौरान सुपुर्दे लहद किया गया। तदफ़ीन में अरकाने नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन ने भी शिरकत की। 21 दिसम्बर को नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन के ज़ेरे एहतेमाम क़ाएदे मिल्लत की सरपरस्ती में दफ़्तर नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन में एक ताज़ियती जल्सा हुआ जिसमें मौलानाए मरहूम के अख़लाक़े हसनह और ख़िदमात का तज़किरह रहा। जल्सा फ़ातेहाख़्वानी पर ख़त्म हुआ। मौलाना के वतन बिजनौर में मज्लिसे सोएम व फ़ातेहाख़्वानी में क़ाएदे मिल्लत दीगर उलमा के साथ शरीक हुए। अरकाने नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन मरहूम के पसमन्दगान को ताज़ियत पेश करते हुए मोमिनीन से फ़ातेहाख़्वानी की दरख़्वास्त करते हैं।

ईरान में मग़रिबी और ग़ैर अख़लाक़ी संगीत पर पाबन्दी

तेहरान। ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने मुल्की टी0वी0 और रेडियो चैनलों से फैलाए जाने वाले मग़रिबी और ग़ैरअख़लाक़ी संगीत पर पाबन्दी लगा दी है। ईरानी राष्ट्रपति ने मुल्क को 1979ई0 के इस्लामी इंकलाब वाले दौर में वापस ले जाने का अहद किया है। यह पाबन्दी अक्टूबर में ''सुपरीम कल्चर रेव्युलूश्नरी कोंसिल'' की जानिब से जारी किए जाने वाले एक हुक्म नामे पर लगायी गयी है जिसमें लिखा गया था कि मुल्क में मग़रिबी संगीत फैलाने पर पाबन्दी लगायी जाए। कोंसिल के एक बयान के मुताबिक़ ''इस्लामी जमहूरिया ईरान में मग़रिबी और ग़ैर अख़लाक़ी संगीत पर पाबन्दी की ज़रूरत है।

अहमदी नेजाद इसी साल मुल्क के राष्ट्रपति बने हैं और उन्होंने अहद किया है कि वह मुल्क में हाल ही में जारी किये गये सुधार के अमल को मोड़ देंगे। कोंसिल ने अपने अक्टूबर के हुक्मनामे में यह भी कहा कि मुल्क में दिखायी जाने वाली फिल्मों और टी0वी0 प्रोग्रामों पर भी नज़र रखने की ज़रूरत है ताकि उनमें से भी ग़ैर अख़लाक़ी हिस्से हटाए जा सकें। राष्ट्रपति अहमदी नेजाद के मन्सूबे में एतदाल पसन्द हुकूमती अरकान को हुकूमती ओहदों से ख़ारिज करना भी शामिल है। उनकी जगह साबिक़ फौजी कमाण्डर और सियासी तजुरबा रखने वाले मज़हबी रहनुमा रखे जाएँगे।

इराक़ी शीओं में फूट डालने की कोशिश की जा रही है:
आयतुल्लाहिलउज़्मा सीस्तानी मद्दज़िल्लहू

बग़दाद। दुनियाए शीओयत के मरजए वक़्त आयतुल्लाहिल उज़्मा सीस्तानी मद्दज़िल्लहू ने इराक़ी शीओं के दरमियान फूट डालने की मन्सूबाबन्द साज़िश के बारे में ख़बरदार किया है। इराक़ के टी0वी0 चैनल की रिपोर्ट के मुताबिक़ आयतुल्लाहिल उज़्मा आक़ाए सीस्तानी मद्दज़िल्लहू ने अपने बयान में कहा है कि उन्हें शीओं के दरमियान फूट पर तशवीश है और वह इस सूरते हाल से अगल नहीं रह सकते। याद रहे कि आयतुल्लाहिल उज़्मा आक़ाए सीस्तानी मद्दज़िल्लहू हमेशा मुत्तहेदा इराक़ पर ताकीद करते रहे हैं और इराक़ में मुसलमानों की अक्सरियत के मद्दे नज़र मुल्क में इस्लाम पसन्द मिम्बराने पार्लियामेण्ट को मुन्तख़ब किये जाने पर ज़ोर देते रहे हैं।

आयतुल्लाहि उज़्मा आक़ाए सीस्तानी मद्दज़िल्लहू के क़रीबी ज़राय के मुताबिक़ आप सेकुलर या छोटे गठबन्धनों की हिमायत नहीं करते। मुत्तहेदा इराक़ी गठबन्धन इराक़ी शीआ पार्टियों का सबसे बड़ा गठबन्धन है इसमें सुन्नी पार्टियाँ भी शामिल हैं।

एक और मरजए तक़लीद आयतुल्लाहिल उज़्मा बशीर नजफी मद्दज़िल्लहू ने भी मुत्तहेदा इराक़ी गठबन्धन की हिमायत की। आयतुल्लाहिल उज़्मा आक़ाए सीस्तानी मद्दज़िल्लहू के पूरी दुनिया में करोड़ों शीआ मुक़ल्लिद हैं। इराक़ में शान्ति क़ायम करने में उनकी काफी कोशिश है।

मोअल्लिमा-ए-जामेअतुज़्ज़हरा लखनऊ का इन्तेक़ाल

ख़्वाहर राहिला बानो बिन्ते नज़ीर हुसैन गोपालपुरी (जो जामेअतुज़्ज़हरा की साबिक़ तालिबा और अब मोअल्लिमा की हैसियत रखती थीं) कुछ अरसे की बीमारी के बाद पटना, बिहार में 19 दिसम्बर 2005ई0 मुताबिक़ 16 ज़ीक़ाअदा 1426हि0 दोशम्बह को इन्तिक़ाल फरमा गयीं। कई दिनों से जामेअतुज़्ज़हरा में रन्ज व ग़म, मजालिस व क़ुर्आनख़्वानी का सिलसिला जारी है। जामेआ की होनहार मुअल्लिमा ख़्वाहर तन्ज़ीम ज़हरा साहेबा ने हालात से मुतास्सिर होकर एक तवील और दर्द में डूबा हुआ शख़्सी मरसिया तहरीर फरमाया है जो यक़ीनन मरहूमा को जामेआ की नुमाइन्दगी में एक इल्मी व अदबी ख़िराजे अक़ीदत है। मसलन दो शेरः

कैसे यक़ीन हो मौत का फुरक़त के दिन न थे
ऐ राहिला अभी तेरी रिहलत के दिन न थे
माँ–बाप जाँब्लब हैं अइज़्ज़ा हैं बेक़रार
सब कह रहे हैं हम से बिछड़ने के दिन न थे

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के अरकान इस आलेमा व मुअल्लिमा के इन्तिक़ाल पर मरहूमा के वालदैन व रिश्तेदारों और जामेआ की उस्ताज़ात व तालेबात को ताज़ियत पेश करते हैं और मोमिनीन से ईसाले सूर–ए–फातिहा की गुज़ारिश करते हैं।